प्राह' इत्यादि श्रुतियों में भी कहे गये है ॥ ५ ॥

अध्यारोपः

असर्पभूतायां रज्जौ सर्पारोपवद्वस्तुन्यवस्त्वारोपोऽध्यारोपः। वस्तु सच्चिदानन्दानन्ताद्वयं ब्रह्म, अज्ञानादिसकलजडसमूहोऽवस्तु। अज्ञानं तु

Scanned with CamScanner

सदसद्भ्यामनिर्वचनीयं त्रिगुणात्मकं ज्ञानविरोधि भावरूपं यत्किञ्चिदिति वदन्त्यहमज्ञ इत्याद्यनुभवात् 'दैवात्मशक्तिं स्वगुणैर्निगूढाम्' इत्यादिश्रुतेश्च ॥

अतस्मिंस्तदबुद्धिरारोपः । कस्मिंश्चिद्वस्तुनि तत्समानावस्तुभ्रम इति भाव-

किसी वस्तु में उसी के समान अन्य वस्तु के आरोप (भ्रम) को अध्यारोप कहते हैं, जैसे रस्सी में सर्प का भान होना अध्यारोप है। अंधेरे में पड़ी हुई रस्सी देखनेवाले का रस्सीविषयक अज्ञान सर्प के आकार में परिणत हो जाता है, किन्तु पास जाकर भलीभाँति देखने से वह अज्ञान दूर होकर यह निश्चित हो जाता है कि साँप नहीं, प्रत्युत रस्सी है। इसी प्रकार स्वयंप्रकाश अनन्त ब्रह्मरूपी वस्तु में अज्ञान तथा तज्जन्य सम्पूर्ण चराचर जगद्रूपी अवस्तु भासित होती है, किन्तु ब्रह्मरूपी वस्तु के ज्ञात हो जाने पर जगद्रूपी अवस्तु का भ्रम जाता रहता है। यही ब्रह्मरूपी वस्तु में जगद्रूपी अवस्तु का आरोप (भ्रम) अध्यारोप है, इसी को अध्यास या विवर्त भी कहते हैं।

अज्ञाननिरूपण—अध्यारोप में वस्तु और अवस्तु अपेक्षित है। रस्सी में साँप का अध्यारोप होने पर रस्सी वस्तु है, साँप अवस्तु है। इसी प्रकार ब्रह्म

Scanned with CamScanner

और जगत्-सम्बन्धी अध्यारोप में सर्वदा एवं सर्वत्र रहनेवाला स्वयंप्रकाश चेतन, आनन्दस्वरूप ब्रह्म वस्तु है। अज्ञान तथा ज्ञान से उत्पन्न जड़ पदार्थ समूह, जो कि दिखलाई देता है तथा सावयव होने के कारण नश्वर है, सब अवस्तु है। इसी बात को और स्पष्ट करने के लिए 'अज्ञानं तु' इत्यादि लिख-कर अज्ञान का स्वरूप बतलाया गया है। अज्ञान न तो सत् है और न असत् है, यदि सत् होता तो वह सर्वदा तथा सब जगह रहता और कभी बाधित न होता; पर ऐसा नहीं है, क्योंकि ब्रह्मबोध हो जाने पर उसका नाश हो जाता है। अज्ञान असत् भी नहीं, क्योंकि ऐसा होने से वह जड़ पदार्थों के आभास आदि का कारण नहीं हो सकता। [जिसकी सत्ता ही नहीं वह किसी वस्तु का कारण कैसे बन सकता है।] इसके अतिरिक्त उसकी प्रतीति होती है, इस कारण भी उसे असत् नहीं कह सकते। अतः वह 'सच्चेन्न बाध्येत असच्चेन्न प्रतीयेत' इस प्रकार सत्त्व और असत्त्व दोनों से रहित होने के कारण अनिर्वचनीय है।

अब यह सन्देह होता है कि यदि अज्ञान (अविद्या) अनिर्वचनीय है और किसी भी प्रकार जाना ही नहीं जा सकता तो उसकी सत्ता ही न होगी। इस सन्देह को दूर करने के लिए उसका विशेषण **'त्रिगुणात्मकम्'** दिया गया है। अर्थात् "अजामेकां लोहितशुक्लकृष्णां बह्वीः प्रजाः सृजमानां सरूपाः। अजो ह्येकोजुषमाणोऽनुशेते जहात्येनां भुक्तभोगामजोऽन्यः" इत्यादि श्रुतियों से से यह प्रमाणित होता है कि वह 'अज' है, तथा सत्त्वरजस्तमोगुणात्मक है, अतः वह सत्ताहीन नहीं प्रत्युत उसकी सत्ता है, किन्तु फिर भी यह सन्देह होता है कि यदि अज्ञान (अविद्या) 'अज' है तो आकाशादि की तरह सर्वत्र विद्यमान एवं सत्यवत् भासित होने के कारण वह संसार से निवृत्त कैसे हो सकता है, इस सन्देह को दूर करने के लिए उसका दूसरा विशेषण **ज्ञानविरोधी** दिया गया है। अर्थात् अज्ञान अज है, त्रिगुणात्मक है तथापि आत्मसाक्षात्कार होने पर नष्ट हो जाता है। यही बात गीता में भी कही गई है:—

'दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ॥'

---

१. जिसकी सत्त्वेन या असत्त्वेन किसी भी रूप से सत्ता नहीं, उसे वेदान्त में 'अनिर्वचनीय' कहते हैं।

Scanned with CamScanner

इस प्रकार यह अज्ञान (अविद्या, माया) त्रिगुणात्मक भावरूप तो है, किन्तु वह 'ऐसा ही है' 'यही है' इस प्रकार निश्चय करके नहीं प्रदर्शित किया जा सकता। इसीलिये उसको 'यत्किञ्चित्' कहा गया है, अर्थात् सर्वशक्तिसम्पन्न वह कुछ विचित्र ही है, क्योंकि वह न तो सत् है और न असत् है और न सदसदुभयरूप है, न सावयव है, न निरवयव है और न सावयवनिरवयोभयरूप है। अतः उसका किसी भी रूप से वर्णन नहीं किया जा सकता। इसी कारण उसको 'अनिर्वचनीय' कहा गया है। प्रमाणों से उसको जानना वैसा ही है, जैसे अत्यन्त प्रकाश के द्वारा अँधेरा का देखना। इसीलिए वेदान्त-सिद्धान्तमुक्तावली में कहा गया है :—

'अज्ञानं ज्ञातुमिच्छेद् यो मानेनात्यन्तमूढधीः।
स तु नूनं तमः पश्येद्दीपेनोत्तमतेजसा ॥'

इस प्रकार के अज्ञान में 'अहमज्ञः' 'मामहं न जानामि' इत्यादि प्रत्यक्षावभास ही प्रमाण हैं। इसी कारण श्वेताश्वर उपनिषद् में इस (अज्ञान, माया) को 'देवात्मशक्ति स्वगुणैर्निगूढाम्' कहा गया है।

विशेष—शङ्कराचार्य ने इसी अज्ञान के लिए अविद्या तथा माया शब्द का प्रयोग किया है और यह कहा है कि यह माया भगवान् की अव्यक्त शक्ति है। वह सत्, रज, तम इन तीनों गुणों से युक्त है। उसके आदि का पता नहीं। उसकी सत्ता का पता उसके कार्यों से चलता है। वही इस जगत् को उत्पन्न करती है—

'अव्यक्तनारी परमेशशक्तिरनाद्यविद्या त्रिगुणात्मिका या।
कार्यानुमेया सुधियैव माया यया जगत्सर्वमिदं प्रसूयते ॥

वह न सत् है न असत् और न सदसदुभयरूप है। वह न भिन्न है न अभिन्न है और न भिन्नाभिन्नोभयरूप है। न अंग-सहित है, न अङ्ग-रहित है, और न उभयरूप है, किन्तु वह अत्यन्त अद्भुत अनिर्वचनीय है। वह ऐसी है जिसको कोई बतला ही नहीं सकता :—

'सन्नाप्यसन्नाऽप्युभयात्मिका नो भिन्नाऽप्यभिन्नाऽप्युभयात्मिका नो
साङ्गाऽप्यनङ्गाऽप्युभयात्मिका नो महाद्भुताऽनिर्वचनीयरूपा ॥ ६ ॥

Scanned with CamScanner